भूमिका

समकालीन भारतीय परिदृश्य में महात्मा गांधी और उनके विचार एक संभावना के रूप में उभरे हैं। रचनात्मक जगत की मान्यताएँ उसमें फलीभूत हुई हैं। कला, साहित्य और संस्कृति की धाराएँ इससे अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हैं। भारतीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा गांधीवादी साहित्य से समृद्ध है। एक ओर गांधीवादी आलोचनात्मक दृष्टि साहित्य मूल्यांकन की कसौटी के रूप में जानी जाती है जिसमें साहित्य का समाजशास्त्रीय व युगानुरूप परिस्थितियों के अनुसार आंकलन किया जाता है तो दूसरी ओर कला के अन्य माध्यमों में गांधी चरित्र और गांधीवादी दर्शन का प्रयोग हुआ है जिसमें गांधी के प्रयोगों की प्रासंगिकता की खोज हुई है।

आधुनिक भारतीय संदर्भों में मोहनदास करमचंद गांधी एक विशिष्ट नाम है जिन्होंने भारतीय राजनीति की दशा और दिशा बदल कर रख दी। उनका जीवन दर्शन सत्य और अहिंसा पर आधारित नवीन सामाजिक संरचना का मूल स्वर है। गांधी की प्रासंगिकता का अंदाजा हिन्दी सिनेमा, भारतीय नाट्य परिदृश्य, कार्टून जगत और भारतीय राजनीति में उनके नाम पर हो रही लूट तथा अण्णा आंदोलनों से लगाया जा सकता है।

महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन में निर्णायक भूमिका अदा की। कई नाटकों को पढ़ने के बाद लगा कि विराट व्यक्तित्व के स्वामी होते हुए भी उनके अंदर सामान्य व्यक्ति की भांति अंतर्द्वंद्व है। उनमें एक ऐसा आकर्षण है जो लाखों की भीड़ को प्रभावित कर देता है। वे भारतीय और पाश्चात्य दर्शन का समन्वय कर एक नई

विचार धारा को विकसित करते हैं। आखिर एक व्यक्ति अपने जीवन को किस तरह इतना व्यवस्थित और संयमित बना लेता है; किस तरह जीवन को एक निश्चित समय सारणी में बांध लेता है; ये ऐसे प्रश्न थे जो मुझे हमेशा कुरेदते रहे। इन्हीं सवालों को तलाशने के लिए मैंने गांधी द्वारा लिखे साहित्य का अध्ययन किया। इस दिशा में आगे बढ़ते हुए गांधी पर बनी फिल्मों और नाटकों को देखने का प्रयास किया।

समस्त गांधीवादी दर्शन और गांधी-चरित्र पर आधारित नाटकों को पढ़ने के बाद उनसे उपजी कसमसाहटों और अंतर्वेदना को प्रस्तुत यह लघु शोध-प्रबंध 'समकालीन संदर्भों में गांधीवादी दर्शन पर आधारित हिन्दी नाटक' प्रस्तुत है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को चार अध्यायों में बांटा गया है।

पहला अध्याय 'गांधीवादी दर्शन की वैचारिक पृष्टभूमि' है, जिसे तीन उप अध्यायों में बांटा गया है। 'गांधीवाद समय की उपज' में गांधी विचार के उत्पन्न होने की परिस्थितियों की तलाश की गई है। दूसरे उप अध्याय 'गांधीवादी दर्शन पर भारतीय और पाश्चात्य दर्शन का प्रभाव' में गांधी के ऊपर पाश्चात्य और भारतीय दर्शन के प्रभाव को दर्शाया गया है। तीसरे उप अध्याय 'गांधीवादी दर्शन की पुनर्व्याख्या' में परिवर्तन के उन सरोकारों को रेखांकित किया गया है जिससे गांधीवादी दर्शन के मूल्य में परिवर्तन की संभावना उत्पन्न हुई है। इस प्रकार इस अध्याय में गांधीवादी दर्शन के वैचारिक सिद्धांतों को सहेजा गया है।

दूसरा अध्याय 'हिन्दी नाटकों की विकास परंपरा' है जिसमें जीवन दर्शन पर आधारित नाटकों के विकास को दिखाया गया है। एक अविचल परंपरा जो संस्कृत

नाटक, मध्यकालीन लोकनाटक से होती हुई भारतेन्दु युग, प्रसाद युग, प्रसादोत्तर युग से होती हुई समकालीन नाट्य परिदृश्य की ओर आगे बढ़ती गई है । नाटकों का तात्कालिक राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यांकन करते हुए आज के संदर्भ में उसकी महत्ता दिखाने का प्रयास किया गया है।

तीसरे अध्याय 'गांधीवादी दर्शन पर आधारित समकालीन हिन्दी नाटकों की अंतर्वस्तु' में तीन प्रतिनिधि नाटकों – 'गोडसे@गांधी.कॉम', 'बकरी' और 'गांधी को फांसी दो!' के जरिए गांधीवादी दृष्टि को नाटकों में ढूँढने का प्रयास किया गया है। इन नाटकों में गांधीवादी मूल्य – ब्रह्मचर्य, अहिंसा, सत्य के प्रयोग, स्त्री- पुरुष संबंध 'हिन्द स्वराज' में प्रदर्शित मूल्य को उठाया गया है। साथ ही उन मूल्यों की आज क्या स्थिति है इसकी भी तलाश की गई है।

अंतिम अध्याय 'गांधीवादी हिन्दी नाटक : प्रासंगिकता और मूल्यांकन' में इन नाटकों के मुखर स्वर की तलाश की गई है। आज गांधीवादी दर्शन समाज के प्रत्येक क्षेत्र में क्या प्रभाव डाल रहा है। उसकी प्रासंगिकता को नाटक में नाटककार ने और मंच पर निर्देशक ने कैसे प्रदर्शित किया है, उसका मूल्यांकन किया गया है। मेरे शोध की पद्धति मूलतः आलोचनात्मक है। विश्लेषण की प्रक्रिया में मैंने आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया है।